परंपरा को समृद्ध करती है क्षेत्रीय भाषा

बोले डॉ एचएन सिंह

रांची, विशेष संवाददाता। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, रांची और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय की ओर से बुधवार को- जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच अंतरसंबंध और विशेषता, विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता रांची विवि के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व प्राध्यापक डॉ एचएन सिंह ने अपने संबोधन में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को रेखांकित किया। कहा कि इन भाषाओं के बीच ऐतिहासिक, सामाजिक व सांस्कृतिक अंतरसंबंध महत्वपूर्ण हैं। ये भाषाएं एक-दूसरे को शब्द, व्याकरण, साहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं से समृद्ध करती आई हैं।

डॉ रामदयाल मुंडा की पुस्तक- आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी

डीएसपीएमयू में बुधवार को आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते अतिथि।

■ डीएसपीएमयू में 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के बीच अंतरसंबंध और विशेषता' विषय पर संगोष्ठी में चर्चा

क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति महत्वपूर्ण: डॉ शांडिल्य

डीएसपीएमयू के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने भारत के भाषावैज्ञानिक विभाजन पर चर्चा की। कहा, जनजातीय व क्षेत्रीय भाषाओं की उपस्थिति झारखंड की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को दर्शाती हैं और इनके संरक्षण के लिए प्रयास आवश्यक हैं। झारखंड राज्य मुक्त विवि के कुलपति डॉ टीएन साहू ने जनजातीय भाषाओं की संरचना एवं उनकी सामाजिक भूमिका पर बात की। उन्होंने मुंडारी, हो, संथाली, खड़िया, कुड़ुख एवं मालतो जैसी भाषाओं के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य व वर्तमान स्थिति को भी बताया।

अस्मिता के सवाल, के संदर्भ में बताया कि झारखंड की जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाएं परस्पर प्रभावित होती रही हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर विस्तार से चर्चा की। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा के समन्वयक डॉ बिनोद कुमार ने झारखंड के स्थानों के नामों पर चर्चा करते हुए बताया कि राज्य के अधिकांश गांवों और स्थानों के नाम मुंडारी और कुड़ुख भाषाओं से उत्पन्न हुए हैं। संगोष्ठी में शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद रहे।